नेपाल का भौगोलिक विवरण-1

Geographical Account of Nepal-1

बोलेंद्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल,
राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान

हिमालय की गोद में बसा नेपाल एक छोटा-सा पर्वतीय और खूबसूरत देश है । यह भारत तथा चीन के बीच बफर स्टेट या सैंडविच स्टेट की स्थिति में है । यहां के लोग गठीले कद-काठी वाले मेहनती और ईमानदार होते हैं । यह एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है ।

स्थिति एवं विस्तार

राजधानी:	काठमांडू
अक्षांशीय विस्तार:	16° 20’ से 30° 10’ N
देशांतरीय विस्तार:	80°15’ से 88°12’ E
पूरब से पश्चिम लंबाई:	880 किलोमीटर
उत्तर से दक्षिण चौड़ाई:	240 किलोमीटर
क्षेत्रफल:	1,47,516 वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या 2011:	2,64,94,504 व्यक्ति

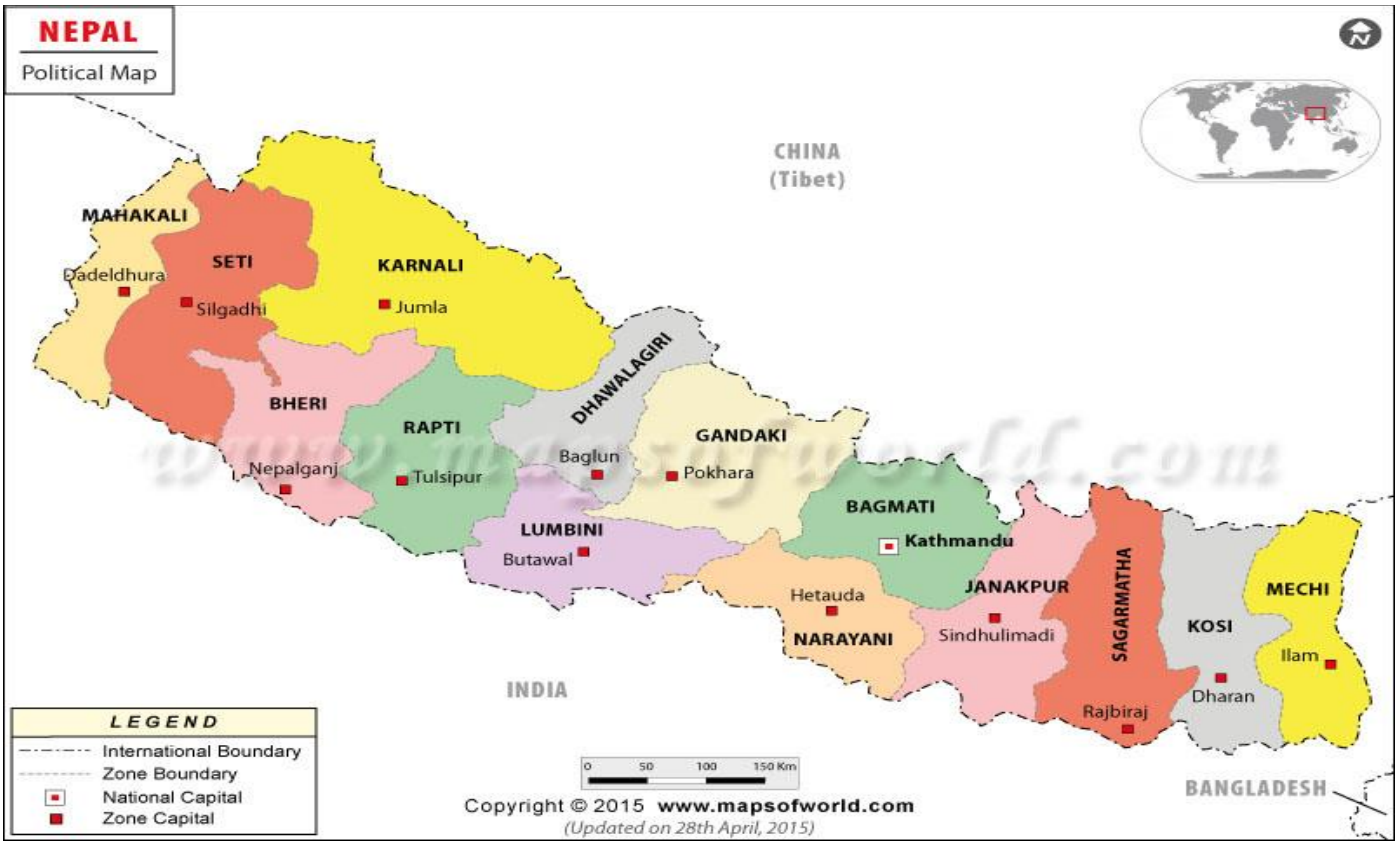

चित्र स्रोत: https://www.mapsofworld.com/nepal/nepal-political-map.html

<u>नेपाल की चौहद्दी</u>: उत्तर में चीन, पूरब में पश्चिम बंगाल और सिक्किम, दक्षिण में बिहार और पश्चिम में उत्तराखंड । इसकी आकृति लगभग चतुष्कोणीय है ।

<u>धरातलीय क्षेत्र</u>

नेपाल में हिमालय पर्वत की गहरी घाटियां और ऊंची हिमाच्छादित चोटियाँ विस्तृत है । यहां घने वन और दलदल भी पाए जाते हैं । नेपाल के तीन भौगोलिक खंड निम्नलिखित हैं:

महान हिमालय प्रदेश
आंतरिक हिमालय प्रदेश
तराई प्रदेश

महान हिमालय प्रदेश

महान हिमालय प्रदेश में अनेक दर्रे पाए जाते हैं । ऊंची चोटिया तथा गहरी घाटियों का विस्तार भी मिलता है । इन घाटियों में कई नदियां जैसे कोसी, गंडक आदि हजारों मीटर गहराई तक बहती है । यह सभी पूर्ववर्ती नदियां हैं अर्थात यह हिमालय के निर्माण के पहले से ही बहती आ रही है । इस प्रदेश में तीन ऊंची चोटियां हैं

एवरेस्ट	*8848 मीटर*
कंचनजंगा	*8585 मीटर*
धौलागिरी	*8507 मीटर*

यहां की जलवायु बहुत ही कठोर है । उत्तर की ओर से आने वाली शीतल पहने यहां तक नहीं पहुंच पाती है । अतः दक्षिणी भाग गर्म रहता है । हालांकि मानव का बसाओ 4000-45000 मीटर की ऊंचाई तक ही पाया जाता है क्योंकि थोड़ी-बहुत कृषि यहां पर संभव है ।

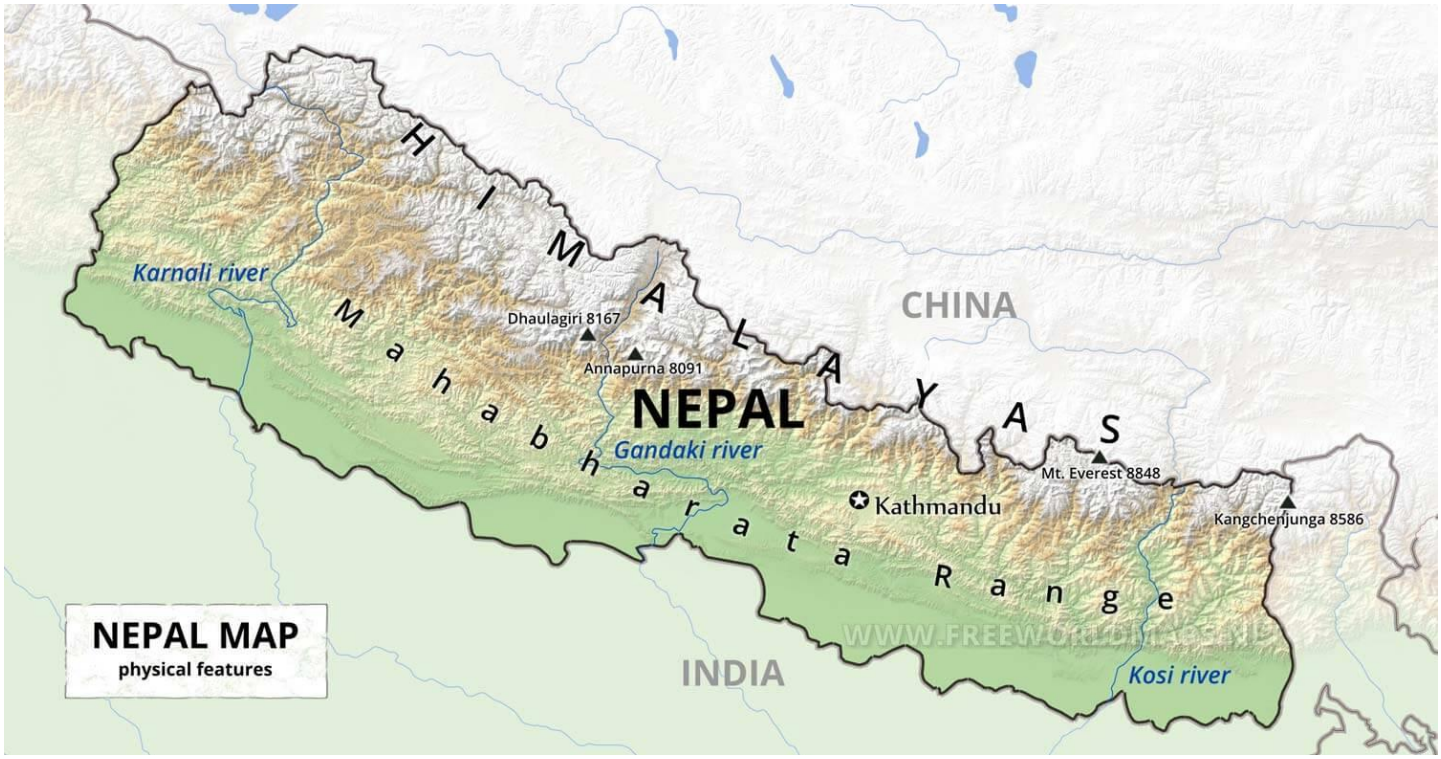

चित्र स्रोत: https://www.freeworldmaps.net/asia/nepal/map.html

आंतरिक हिमालय प्रदेश

यह महान हिमालय तथा दक्षिणी तराई प्रदेश के मध्य स्थित है । इसे महाभारत श्रेणी भी कहा जाता है । इन श्रेणियों का ढाल उत्तर में मंद तथा दक्षिण में तीव्र है । महान हिमालय तथा आंतरिक हिमालय के बीच में विश्व प्रसिद्ध काठमांडू की घाटी स्थित है जो 24 किलोमीटर लंबी और 11 किलोमीटर चौड़ी है । इस प्रदेश की जलवायु ऊंचाई के अनुसार बदलती रहती है । शीतकाल में कठोर सर्दी और ग्रीष्म काल में गर्मी तथा वर्षा होती है । इस घाटी की ऊंचाई 1500 मीटर है, जहां वार्षिक वर्षा 125 सेंटीमीटर होती है । इस प्रदेश में उष्णकटिबंधीय वनस्पति पाई जाती है । ऊंचे भागों में नुकीली पत्ती वाले वन मिलते हैं । घाटी क्षेत्र में चावल, गन्ना, जूट, नारंगी और केले की खेती होती है ।

तराई प्रदेश

यह नेपाल का दक्षिणी भाग है जहां भाभर और तराई क्षेत्र सम्मिलित हैं । यहां चुरिया पर्वत श्रेणी का विस्तार है जिसमें सवाना घास का क्षेत्र भी पाया जाता है । महाभारत श्रेणी के दक्षिण में कई घाटियां पाई जाती हैं जिन्हें दून घाटी कहा जाता है । इसके दक्षिण में भाभर क्षेत्र पाया जाता है जिसमें नदियों द्वारा बहा कर लाया गया अवसाद पाया जाता है । तराई का निचला भाग उपजाऊ मैदान है जो आगे जाकर गंगा के मैदान से मिल जाती है । तराई का उत्तरी बड़ा भाग दलदली है । तराई की जलवायु उष्णकटिबंधीय है । पूर्वी तथा मध्य पश्चिमी भागों में 150 सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा होती है जबकि पश्चिमी क्षेत्र 75 सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा होती है जिस कारण यह प्रदेश सूखा रह जाता है । वर्षा वाले भागों में गन्ना, जूट, चावल, तंबाकू, अनाज और राई का उत्पादन किया जाता है जबकि शुष्क भागों में गेहूं और मोटे अनाज की खेती होती है ।

नदियां

तराई भाग में सबसे अधिक नदियां बहती हैं जैसे कोसी, करनाली, बागमती, गंडक और उनकी सहायक नदियां । इन नदियों में बरसात में भयानक बाढ़ आती है । बाढ़ के दौरान उपजाऊ मिट्टी तराई क्षेत्र में बिछा दी जाती है । नेपाल का पूर्वी भाग कौशिकी प्रदेश कहलाता है जहां कोसी और उसकी सहायक नदियां साथ मिलकर अरुण नदी के रूप में गंगा में मिल जाती है । बागमती नदी काठमांडू की घाटी से होकर बहती है । पश्चिमी मध्य भाग को गंडकी प्रदेश कहते हैं जहाँ गंडक और उसकी सहायक नदियों के साथ बहती है और त्रिशूली धारा के रूप में गंगा से मिल जाती हैं । पश्चिमी ओर के भाग को कर्णाली कहा जाता है । इसमें करनाली और शारदा सहायक नदियों के साथ गंगा में मिल जाती हैं ।

जलवायु

नेपाल हिमालय पर्वत में बसा हुआ है इसलिए यहां की सामान्य जलवायु ठंडी है । शीत ऋतु में कठोर सर्दी तथा हिमपात होता है और इस कारण यहां तापमान शून्य से 10 डिग्री नीचे तक चला जाता है । शीत ऋतु में आर्थिक क्रियाकलाप लगभग बंद हो जाता है । ग्रीष्म ऋतु काफी सुहावनी होती है जब पर्यटक और पर्वतारोही नेपाल घूमने के लिए आते हैं । यहां गर्मियों में तापमान 27 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है जबकि पर्वतीय क्षेत्र ठंडे ही रहते हैं । ग्रीष्म काल में वर्षा जून से सितंबर तक मानसून के कारण होती है । यहां का औसत वार्षिक वर्षा 150 सेंटीमीटर है । शीत ऋतु में पश्चिमी विक्षोभ के कारण थोड़ी सी बारिश हो जाती है । उच्च पर्वतीय ढालो पर वर्षा 250 सेंटीमीटर तक होती है ।

प्राकृतिक वनस्पति

नेपाल में 18% भूभाग पर वन पाया जाता है । यहां विभिन्न ऊंचाइयों पर विभिन्न प्रकार के वन पाए जाते हैं । तराई क्षेत्र में 1500 मीटर ऊंचे भागों में उष्णकटिबंधीय चौड़ी पत्ती वाली बन पाए जाते हैं । 1500 से 2700 मीटर के बीच शीतोष्ण कटिबंधीय चौड़ी पत्ती वाले वन पाए जाते हैं, जहां के प्रमुख वृक्ष है: बलूत, एल्डर, पोलर, एश आदि । 2800 से 3700 मीटर की ऊंचाई पर कोणधारी वन पाए जाते हैं । 3700 मीटर से ऊपर टुंड्रा तुल्य वनस्पति पाई जाती है ।

अत्यधिक ऊंचाइयों पर स्थाई हिम प्रदेश स्थित है । काठमांडू घाटी में घास के मैदान भी पाए जाते हैं । देश के लगभग एक तिहाई भाग में वनों का विस्तार पाया जाता है परंतु इनके दुर्गम और अगम में होने से इनका उपयोग बहुत कम हो पाता है ।

कृषि

नेपाल एक कृषि प्रधान देश है जहाँ 66 प्रतिशत लोग सीधे खेती से जुड़े हैं। चूँकि नेपाल एक पर्वतीय देश है इसलिए यहां पर कृषि भूमि कम ही (कुल भूमि का 20%) उपलब्ध है । अधिकांश कृषि भूमि दक्षिण-पूर्वी तराई में स्थित है जो कुल कृषि भूमि का लगभग 80% है । प्राचीनकाल से ही काठमांडू घाटी में गहन कृषि की जाती है । पूर्वी नेपाल का धरातल असमान होने के कारण चारागाह के रूप में प्रयुक्त होता है । पश्चिमी भाग कम वर्षा के कारण अच्छी कृषि नहीं कर पाता है । नेपाल के कुल कृषि के 20% भाग पर भी सिंचाई की सुविधाएं उपलब्ध है ।

फसल	कुल कृषि योग्य भूमि का भाग
चावल	56%
मकई और मोटे अनाज	25%
गेहूं	7%
आलू	5%
तंबाकू	3%
जूट	2%
अन्य	2%

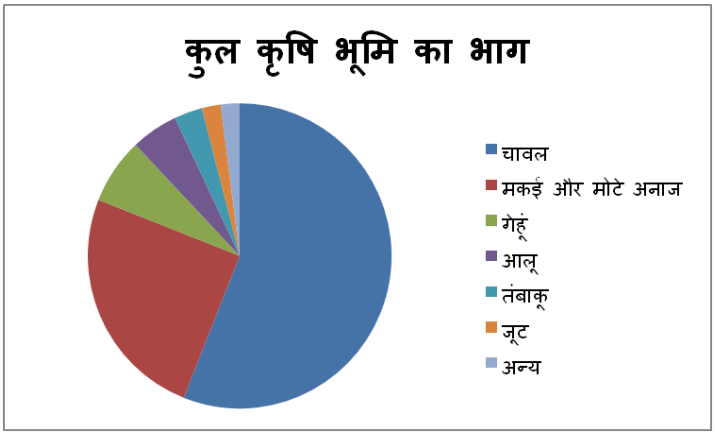

खेती प्रकृति में निर्वाह योग्य है और फसल ज्यादातर पशुधन के साथ एकीकृत है। नेपाल कृषि-जैव विविधता से समृद्ध है। चावल, मक्का, बाजरा, गेहूं, जौ और एक प्रकार का अनाज प्रमुख प्रधान खाद्य फसलें हैं ।

नेपाल की मुख्य फसलें चावल, गेहूं, जूट, गन्ना, तिलहन और आलू है । तराई प्रदेश में मानसूनी वर्षा के कारण चावल की अच्छी कृषि हो जाती है । महान हिमालय में 3600 मीटर की ऊंचाई तक खेती के सहारे आलू पैदा किया जाता है तथा ढालो पर पशुचारण किया जाता है । काठमांडू तथा पोखरा घाटियों में गहन कृषि की जाती है और दो फसलें प्राप्त की जाती हैं ।

व्यापारिक फसलों में चाय, कपास, तंबाकू आदि प्रमुख है । घाटियों में नारंगी, केला और अन्य फलों की कृषि की जाती है । पूर्वी पहाड़ियों में इलायची की खेती प्रमुख है ।

नेपाल में कृषि समस्याएं

- असमान धरातल
- वर्षा की अनिश्चितता
- सिंचाई के साधनों का अभाव
- दोषपूर्ण भूमि व्यवस्था
- किसानों की ऋणग्रस्तता
- रासायनिक उर्वरकों का सीमित उपयोग
- हेर-फेर की कृषि का अभाव

सिंचाई व्यवस्था में सुधार

भारत की सहायता से नेपाल में विभिन्न नदी घाटी परियोजनाओं के माध्यम से सिंचित क्षेत्रों में विकास किया जा रहा है । जैसे कोसी परियोजना के अंतर्गत नेपाल में छतरा नहर के अतिरिक्त पश्चिमी नहर द्वारा 14000 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की जाएगी तथा लगभग 18000 किलो वाट शक्ति का उत्पादन भी किया जाएगा । इसी प्रकार गंडक परियोजना से राप्ती दून क्षेत्र के लगभग 7000 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की जाएगी तथा 1000 किलो वाट शक्ति का उत्पादन होगा । त्रिशूली जलविद्युत परियोजना के अंतर्गत प्रथम चरण में 9000 किलो वाट तथा अंतिम रूप से ही का उत्पादन किया जाएगा । इस प्रकार विभिन्न बहुमुखी परियोजनाओं के द्वारा सिंचित भूमि बढ़ रही है । साथ ही जलविद्युत शक्ति के द्वारा अन्य सुविधाएं भी स्थापित होने लगी है । क्रमशः.....

****

- सन्दर्भ: एशिया का भूगोल-एस बी पी डी प्रकाशन(चतुर्भुज ममोरिया), इन्टरनेट

****